डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

संत कवि माधवदेव पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

नई दिल्ली 27 नवंबर 20 21। साहित्य अकादेमी द्वारा भारत की स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष के उपलक्ष में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव श्रृंखला के अंतर्गत संत कवि माधवदेव पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आज समापन हुआ। आज का पहला सत्र सौंदर्यप्रेमी, रचनाकार तथा दार्शनिक माधवदेव पर था। सत्र की अध्यक्षता प्रदीप ज्योति महंत ने की और कार्बी डेका हाजरिका, ब्रजेंद्र त्रिपाठी और वेंकटरमैया गंपा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में साहित्यार्थी लक्ष्मीनाथ बेज़बरुआ पीठ की पूर्व प्रोफेसर कार्बी डेका ने अपने आलेख में कहा कि माधवदेव द्वारा रचित नामघोष एक ऐसी उल्लेखनीय कृति है जिसमें हम माधवदेव के साहित्यिक व्यक्तित्व का उत्कर्ष देख सकते हैं। यह पूरी पुस्तक दर्शन और संगीत का अनोखा मेल तो है ही पर साथ ही कविता, धर्म, चिंतन और भक्ति का उत्कृष्ट नमूना है। इसमें हम भारतीय धर्म और दर्शन का बहुत ही अद्भुत संगम पाते हैं। कवि ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन: माधवदेव तथा उनके समकालीन महापुरुष विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।वेंकटरमैया गंपा ने दक्षिण और उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के जो दार्शनिक स्वर हैं उन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने दोनों के बीच बहुत सी समानताओं का भी उल्लेख किया।

दूसरा सत्र हिरण्य कुमार दास की अध्यक्षता में संपन्न हुआ जिसमें अरविंद राजखोबा, पीकूमणि दत्ता, संजीव शर्मा और तराली शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अरविंद राजखोबा ने अपने आलेख में बताया कि कैसे भक्ति आंदोलन को असम के कोने-कोने तक पहुंचाने के लिए माधवदेव ने नृत्य, संगीत और अभिनय का सहारा लिया। संजीब शर्मा ने माधवदेव द्वारा शुरू किए गए नामघर जिन्होंने कि ग्रामीण समाज में भक्ति को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई के बारे में अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रख्यात संगीतकार और गायिका तराली शर्मा ने माधवदेव के गीतों को गाकर उनके संगीत तत्त्वों की चर्चा करते हुए उन्हें श्रेष्ठ संगीतकार बताया। आगे उन्होंने कहा कि इन गीतों ने असम में संगीत की एक नई परंपरा को जन्म दिया, जो आज तक वहां लोकप्रिय है। अंतिम सत्र में रत्नुत्तमा दास ने माधवदेव की साहित्यिक यात्रा और भास्कर ज्योति शर्मा ने उस काल की भाषाई परंपरा पर विचार विमर्श किया। अरिंदम बरकटकी ने सत्रा संस्थान के आधार पर असम के भक्ति आंदोलन में माधवदेव की भूमिका पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

इस सत्र की अध्यक्षता कार्बी डेका हाजरिका ने की। अंत में साहित्य अकादेमी के सचिव के . श्रीनिवासराव ने इस दो दिवसीय संगोष्ठी में आए सभी प्रतिभागी विद्वानों और कलाकारों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

के. श्रीनिवासराव